अनुभवजन्य अधिगम : अर्थ एवं अवधारणा
[Experiential Learning : Meaning and Concept]

अनुभवजन्य अधिगम का अर्थ
(Experiential Learning)

अनुभवजन्य अधिगम एक शिक्षा प्रक्रिया है, जिसमें अनुभव के माध्यम से व्यक्ति को शिक्षित किया जाता है। इसमें प्रतिबिम्ब द्वारा शिक्षा प्राप्त होती है। अनुभवजन्य अधिगम दुहराव शिक्षा तथा प्रबोधक शिक्षा से काफी अलग है। अनुभवजन्य अधिगम सक्रिय अध्ययन जैसे अभिनय सीखना, साहसिक कार्य सीखना, स्वतंत्र रूप से चयन करना सीखना, सहकारी शिक्षा और सेवा करने के साथ पढ़ना से सम्बन्धित अवश्य है, लेकिन ये सब इसके पर्याय नहीं हैं। अनुभवजन्य अधिगम का अक्सर प्रयोग अनुभवात्मक शिक्षा से किया जाता है, जिसे इसका पर्याय भी कहा जाता है लेकिन अनुभवात्मक शिक्षा, शिक्षा का एक व्यापक दर्शन है और अनुभवजन्य अधिगम व्यक्तिगत सीखने की प्रक्रिया है। अगर अनुभवात्मक शिक्षा से इसकी तुलना की जाये तो कहा जा सकता है कि प्रायोगिक स्थान ठोस मुद्दा है और सीखने के सन्दर्भ से सम्बन्धित है। यद्यपि अनुभवात्मक माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने की अवधारणा सामान्य अवधारणा से बहुत प्राचीन है तथापि शैक्षिक दृष्टिकोण से अनुभवजन्य अधिगम की अवधारणा अभी की हैं। इसकी शुरुआत सन् 1970 में हुयी। डेविड कोल्ब (David Kolb) ने अनुभवजन्य अधिगम के आधुनिक सिद्धान्त को विकसित करने में बहुत सहायता की। डेविड कोल्ब जॉन डीवी (John Dewey), कर्ट लेविन (Kurt Lwin) और जीन पियाजे (Jean Piaget) से काफी प्रभावित थे। डेविड कोल्ब के अनुसार अनुभवजन्य अधिगम व्यक्ति के सीखने की क्रिया पर केन्द्रित होता है। पुस्तकों से जानवरों के विषय में पढ़कर ज्ञान प्राप्त करने के स्थान पर चिड़ियाघर में जाकर वहाँ के पर्यावरण का अवलोकन करके और बातचीत के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना अनुभवजन्य अधिगम का उदाहरण है।

अनुभवजन्य अधिगम शिक्षक की उपस्थिति के बिना भी हो सकता है। यह एक व्यक्ति के प्रत्यक्ष अनुभव के अर्थ लेने की प्रक्रिया से पूरी तरह से सम्बन्धित है। यद्यपि ज्ञान प्राप्त करने की एक निश्चित प्रक्रिया है जो वास्तविक रूप से होती है तथापि वास्तविक अनुभव सीखने के लिए कुछ तत्त्वों का होना आवश्यक होता है। कोल्ब के अनुसार ज्ञान लगातार दो तत्त्वों—वैयक्तिक और वातावरण—के माध्यम से प्राप्त होता है। कोल्ब कहता है कि अनुभव से वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी में चार क्षमताओं का होना आवश्यक है। ये चार क्षमताएँ हैं—

(1) विद्यार्थी सक्रिय रूप से अनुभव में शामिल होने के लिए तैयार होना चाहिए।

(2) विद्यार्थी अनुभव पर प्रतिबिम्ब करने के लिए सक्षम होना चाहिए।

(3) विद्यार्थी को अनुभव धारण करने के लिए विश्लेषणात्मक कौशल का उपयोग करना चाहिए।

(4) विद्यार्थी में अनुभव से प्राप्त नये विचारों का उपयोग करने के लिए निर्णय लेने और समस्या को सुलझाने के कौशल होने चाहिएँ।

इस प्रकार अनुभवजन्य अधिगम शिक्षण या सीखने की तकनीक को विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करता है।

अनुभवजन्य अधिगम की परिभाषा
(Definition of Experiential Learning)

अनुभवजन्य अधिगम को परिभाषित करते हुए **सी० बेयर्ड** (C. Beard) और **जे० विल्सन** (J. Wilson) ने कहा है कि, *"अनुभवजन्य अधिगम को व्यक्ति के आन्तरिक जगत और वातावरण के बाह्य जगत के बीच सक्रिय व्यस्तता के इन्द्रिय प्रशिक्षण की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"*

Scanned by CamScanner

"Experiential learning can be defined as a sense making process of active engagement between the inner world of the person and the outer world of the environment."

उपरोक्त परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि अनुभवजन्य अधिगम व्यक्ति के विचारों, भावों और शारीरिक क्रियाओं की सक्रिय सहभागिता है। इसमें इन्द्रियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि हम इन्द्रियों के माध्यम से ही वातावरण के साथ अन्तःक्रिया करते हैं। न्यूरोसाइंसेज (Neurosciences) के क्षेत्र में हुए अधुनातन शोध भी यह बताते हैं कि सीखने में हमारे शरीर की महत्त्वूर्ण भूमिका होती है।

अनुभवजन्य अधिगम की विशेषताएँ
(Characteristics of Experiential Learning)

(1) अनुभवजन्य अधिगम का उद्देश्य शैक्षिक वातावरण को छात्र केन्द्रित बनाना है।

(2) अनुभवजन्य अधिगम में छात्र अपने अधिगम में सीखने की गति, सीखने की विधि और शिक्षण कौशलों के उपयोग में सक्षम होते हैं।

(3) अनुभवजन्य अधिगम के माध्यम से छात्र मूल्यांकन करने में, समालोचनात्मक चिन्तन करने में, निर्णय करने में और ज्ञान पर अधिकार प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।

(4) अनुभवजन्य अधिगम के द्वारा शिक्षक छात्रों के लिए ज्ञान को सुगम बनाते हैं और उनका पथ प्रदर्शन करते हैं।

(5) अनुभवजन्य अधिगम में अनुभव, छात्रों को मिलकर काम करने, सहयोग के साथ काम करने और स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने वाले होते हैं।

(6) अनुभवजन्य अधिगम में छात्र शिक्षक के द्वारा बताये गये सत्यों को यूँ ही स्वीकार नहीं करते अपितु प्रश्नों के द्वारा स्पष्टीकरण प्राप्त करके और दिये गये प्रमाणों का मूल्यांकन करके उनको स्वीकार करते हैं।

अनुभवजन्य अधिगम की आवश्यकता, महत्त्व एवं क्रियान्वयन
(Need, Importance and Implimentation of Experiential Learning)

(1) यूनेस्को और अनुभवजन्य अधिगम (UNESCO and Experiential Learning)

(2) अनुभवजन्य अधिगम : मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा, 2005 के परिप्रेक्ष्य में (Perspectives on Experiential Learning in MHRD, through the National Curriculum Framework, 2005)

(3) अनुभवजन्य अधिगम की प्रगति में सहयोग करने के लिए राज्य सरकारों द्वारा किये गये कार्य (State Government's Initiatives for promoting Experiential Learning)

(4) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी०बी०एस०ई०) और अनुभवजन्य अधिगम (CBSE and Experiential Learning)

(1) यूनेस्को और अनुभवजन्य अधिगम (UNESCO and Experiential Learning)—आज संसार में प्रायोगिक महत्त्व को समझा गया है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक दशाब्दि में शैक्षिक विकास के लिए यूनेस्को (UNESCO) ने 'टीचिंग एण्ड लर्निंग फॉर ए सस्टेनेबिल फ्यूचर' (Teaching and Learning for a Sustainable Future) नाम से एक कार्यक्रम प्रारम्भ किया, जिसके द्वारा अधिगमकर्त्ताओं को अनुभवों के द्वारा सीखने पर बल दिया गया है। फिनलैण्ड और सिंगापुर ने अपने देश की विद्यालयी शिक्षा में अनुभवजन्य अधिगम को कार्यान्वित किया है। फिनलैण्ड के स्कूलों में 'आउटडोर एजूकेशन' (Outdoor education) शब्द का प्रयोग उस शिक्षण और अधिगम के लिए किया जाता है, जो कक्षा कक्ष (Classroom) के बाहर होता है, जिसके द्वारा बेसिक शिक्षा के राष्ट्रीय केन्द्रिक पाठ्यक्रम (National Core Curriculum) के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। सन् 2005 में सिंगापुर में वहाँ के शिक्षा मंत्रालय के द्वारा मात्रात्मक या संख्यात्मक से गुणात्मक अधिगम के अन्तरण के लिए प्रयास आरम्भ किये गये हैं। शिक्षा में 'गुण अधिक और संख्या या मात्रा कम' (More quality and less quantity) को महत्त्व

Scanned by CamScanner

दिया गया है। उनके राष्ट्रीय दृष्टिकोण या राष्ट्रीय दृष्टि (National Vision) "थिंकिंग स्कूल्स लर्निंग नेशन" (Thinking Schools, Learning Nation) को प्राप्त करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण पग है।

(2) अनुभवजन्य अधिगम : मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा, 2005 के परिप्रेक्ष्य में (Perspectives on Experiential Learning in MHRD, Through the National Curriculum Framework, 2005)—शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों के अनुरूप शिक्षा के विकास और प्रगति में अनुभवजन्य अधिगम बहुत कुछ सहायता कर सकता है। यदि समय रहते प्रयत्न किये जायें तो भारतीय छात्रों के समकालीन स्तर में आवश्यक परिवर्तन करने और उसको ऊँचा उठाने में अनुभवजन्य अधिगम बहुत सहायक हो सकता है। देश के नीति निर्माताओं और शिक्षाविदों ने छात्र केन्द्रित शिक्षण-अधिगम के महत्त्व को स्वीकारा है, जिसके फलस्वरूप भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय और उसके शासकीय निकाय राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) ने इसका न केवल समर्थन किया है अपितु इसको व्यावहारिक रूप देने के लिए कई कदम उठाये हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा-2005 के द्वारा अनुभवजन्य अधिगम के क्रियान्वयन के लिए एक महत्त्वपूर्ण योजना को प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की इस रूपरेखा में एक ऐसी स्पष्ट और कार्यान्वित होने वाली नीति समाहित है जिससे विभिन्न साधनों जैसे पाठ्यचर्या (सिलेबस), पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण शास्त्र (पैडागॉजी), पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं तथा अन्य अतिरिक्त क्रियाओं की सहायता से शिक्षा व्यवस्था और शिक्षण कार्य में वृद्धि और विकास हो सके। यह एक सुविचारित और सुव्यवस्थित कार्य करने की योजना है जिससे विद्यालय द्वारा दी जाने वाली शिक्षा से अपेक्षित आशानुरूप उद्देश्य प्राप्त किये जा सकें। यह अधिगम के उद्देश्यों, अधिगम-शिक्षण की विधियों तथा अधिगम क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करता है कि इनका आंकलन और मूल्यांकन कैसे किया जाये? राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा–2005 में छात्रों के कार्यों पर आधारित अधिगम अनुभवों पर विशेष बल दिया गया है जिससे वे स्वतंत्र रूप से चिन्तन करने और कार्य करने के लिए प्रोत्साहित व प्रेरित हों। पाठ्यक्रम की रूपरेखा-2005 में कहा गया है—

"Children learn in a variety of ways through experience, making and doing things, experimentation, reading, discussion, asking, listening, thinking and reflecting and expressing oneself in speech, movement or writing—both individually and with others. They require opportunities of all these kinds in the course of their development". —(NCF, 2005, page 34)

× × × ×

"Learning tasks that are designed to ensure that children will be encouraged to seek out knowledge from sites other than the textbook, in their own experience, in the experience of people at home and in the community...communicate the philosophy that learning and knowledge are to be sought out, authenticated and thereby construed". —(NCF, 2005, page 39)

× × × ×

"Participatory learning therefore is to be envisioned as a process whereby learners construct meaning through absorption, interaction, observation and reflection".

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा, 2005, इस बात पर विशेष बल देती है कि छात्रों को इस योग्य होना चाहिए कि वे किसी भी विषय पर अपनी असहमति व्यक्त कर सकें, उसके विषय में वाद-विवाद कर सकें और विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न विचारों, व्यवस्थाओं और कार्य पद्धतियों के विषय में स्वतंत्र रूप से चिन्तन कर सकें और तार्किक रूप से अपने मत को अभिव्यक्त कर सकें।

(3) अनुभवजन्य अधिगम की प्रगति में सहयोग करने के लिए राज्य सरकारों द्वारा किये गये कार्य (State Governmen's Initiatives for Promoting Experiential Learning)—भारत में विभिन्न राज्य सरकारों ने अनुभवजन्य अधिगम को व्यावहारिक रूप में प्रयोग करने के लिए अनेक कदम उठाये हैं। उत्तर प्रदेश में बच्चों की अंग्रेजी भाषा को, सुधारने के लिए सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत "आओ अंग्रेजी सीखे (Aao Angrezi Seekhen)" कार्यक्रम 17 जौलाई, 2017 से प्रारम्भ किया गया है। कार्यक्रम की सम्पूर्ण विषयवस्तु को *'दि सेन्टर ऑफ लर्निंग रिसोरसेज'* [The Centre of Learning Resources (CLR)] पूना (महाराष्ट्र) के द्वारा

Scanned by CamScanner

तैयार किया गया है। यह पन्द्रह मिनट की द्विभाषी अन्तःक्रियात्मक मनोरंजनात्मक शैक्षिक क्रममाला कार्यक्रम है जिसकी मुख्य पात्र सुनीता दीदी हैं, जो एक रेडियो टीचर है और कक्षा में छात्रों के साथ अन्तःक्रिया करके हिन्दी भाषी बालकों को अंग्रेजी सिखाती है। यह एक अन्तःक्रियात्मक, बालमित्रता से युक्त नवीन कार्यक्रम है। तमिलनाडु में राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (SCERT) ने अपने तमिल भाषा कोश (Cell) के द्वारा प्रदेश के सभी प्राईमरी स्कूलों में 35,000 से ज्यादा डी०वी०डी० की प्रतियों का विवरण दिया है, जिनमें कक्षा एक से कक्षा पाँच तक के छात्र-छात्राओं की तमिल पुस्तक की सभी कविताओं को सम्मिलित किया गया गया है। इन गीतों में बालकों की आनन्ददायक अभिव्यक्ति विनोदप्रिय अधिगम की आवश्यकता को पूरी करती है। छत्तीसगढ़ सरकार ने प्राथमिक शिक्षा के गिरते हुए स्तर में सुधार करने के लिए संख्या और पढ़ने-लिखने की योग्यता के कौशलों के विकास पर ध्यान केन्द्रित किया और इसके लिए सम्पर्क फाउन्डेशन से सहयोग प्राप्त किया। सम्पर्क फाउन्डेशन ने विद्यालयों के लिए गणित और अंग्रेजी के उपकरणों (Kits) को विकसित करने में सहयोग दिया। गणित के किट में रंगीन आकर्षक सामग्री जैसे नम्बर लाइन, प्ले मनी, संख्याएँ, आकृतियाँ, रंग और अनेक प्रकार की शिक्षण-अधिगम सामग्री शामिल होती है। अंग्रेजी किट के अन्तर्गत एक बैटरी से संचालित श्रव्य यंत्र होता है जो शिक्षक की भूमिका को प्रकट करता है और पाठ से सम्बन्धित शिक्षण अधिगम सामग्री (TLMs) को सक्रिय करता है जिससे शिक्षण रुचिपूर्ण और प्रभावशाली बनता है। नागालैण्ड में सरकार ने राज्य के 690 विद्यालयों में क्रिया एवं योग्यता अधिगम (Activity and Competency Learning ACL) कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। इस शिक्षा व्यवस्था में अधिगमकर्त्ता केन्द्रित शिक्षा के सभी पक्षों को सम्मिलित किया गया है जिससे छात्रों में सृजनात्मक अधिगम आधारित क्रियाओं और क्षमताओं का विकास हो सके। इस व्यवस्था के केन्द्र में बालकों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) है जिसमें प्रारम्भिक साक्षरता और गणित की आवश्यकता को शामिल किया गया है। इस प्रकार राज्य में यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नवीन शैक्षिक नवाचार है।

(4) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी०बी०एस०ई०) और अनुभवजन्य अधिगम (CBSE and Experiential Learning)—केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) ने भविष्य के लिए बालकों को तैयार करने के लिए शिक्षण-अधिगम की शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रिया (Pedagogical processes) के स्वरूप को बदलने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं। इस बदलाव में सक्रिय और अनुभवजन्य अधिगम पर विशेष बल दिया गया है। सी०बी०एस०ई० ने शिक्षक प्रशिक्षण के लिए सत्र 2019-20 के लिए अनुभवजन्य अधिगम को विषय बनाया है।

अनुभवजन्य अधिगम के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक चिन्तकों का चिन्तन (Educational Thinker's Point of View Regarding Experiential Learning)

स्वामी विवेकानन्द (Swami Vivekanand)—स्वामी विवेकानन्द ने अधिगम की अवधारणा में जीवन के अनुभवों पर अत्यधिक बल दिया है। उन्होंने रचनात्मकता के सिद्धान्त को महत्त्व देते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण मनुष्य का निर्माण करना (Man-making) है। यह जीवन पर्यन्त प्रक्रिया है जो आत्म-अन्वेषण (Self-discovery), आत्म-चेतना (Self-awareness), आत्म-पूर्णता (Self-perfection) और आत्म प्रकाशन (Self-manifestation) के लिए मार्ग दिखाती है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि केवल किताबी ज्ञान शिक्षा नहीं है क्योंकि किताबी ज्ञान केवल सैद्धान्तिक ज्ञान देता है, इससे बालक को व्यावहारिक ज्ञान नहीं मिलता। उन्होंने कहा कि, *"तुमको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यावहारिक बनना पड़ेगा, सिद्धान्तों के ढेरों ने सम्पूर्ण देश का विनाश कर दिया है।"* व्यक्ति को स्वयं अपने परिश्रम से ज्ञान की खोज करनी है। जिस प्रकार चकमक के टुकड़े में अग्नि छिपी रहती है, उसी प्रकार ज्ञान भी मन में निहित है। केवल उसे खोजने और जागृत करने की आवश्यकता है। इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने पाठ्यक्रम में क्रियात्मक कार्यों को सम्मिलित करने पर विशेष बल दिया।

रविन्द्रनाथ टैगोर (Ravindranath Tagore)—टैगोर के शिक्षा दर्शन के तीन आधारभूत सिद्धान्त हैं— स्वतंत्रता (Freedom), सक्रिय सम्प्रेषण (Active Communication) और सृजनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति (Creative self-expression)। टैगोर का विश्वास था कि विद्यालय के कक्षा-कक्ष की चारदीवारी में प्राप्त की जाने वाली शिक्षा कृत्रिम और मूल्यों का क्षरण करने वाली शिक्षा होती है। उन्होंने कहा कि "हमको जानना

Scanned by CamScanner

चाहिए कि शिक्षा संस्था का महान् कार्य बालकों को विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से मस्तिष्क और सभी इन्द्रियों की शिक्षा प्रदान करना है।" (We should know that the great task of the institution is to provide for the education of mind and all the senses through various activities.) टैगोर का कहना है कि पुस्तक के स्थान पर जहाँ तक सम्भव हो सके बालकों को प्रत्यक्ष स्रोतों से ज्ञान प्राप्त के अवसर प्रदान किये जाने चाहिएँ। उनको इस प्रकार के अवसर दिए जाने चाहिएँ कि वे अपनी रचनात्मक प्रवृत्तियों को विकसित कर सकें। केवल समुद्र के किनारे खड़े होकर या उसे स्थिर होकर देखने से समुद्र को पार नहीं किया जा सकता (You cannot cross the sea merely by standing and staring at the water)" बालक क्रिया करके, रचना करके, सृजन करके, खोज करके ही सच्चा ज्ञान प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इस प्रकार टैगोर स्वाभाविक, प्राकृतिक और स्वतंत्र वातावरण में स्वतंत्र प्रयास द्वारा शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं।

जे० कृष्णामूर्ति (J. Krishnamurti)—जे० कृष्णामूर्ति शिक्षा के द्वारा एक नूतन संस्कृति व नूतन विश्व का निर्माण करना चाहते हैं। उनका कहना है कि *"जीवन को समझना अपने आपको समझना है और यही शिक्षा का आरम्भ और अन्त है।"* (To understand life is to understand ourselves and thus both the beginning and end of education) वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को आत्म ज्ञान कराये अर्थात् अन्तःमन का ज्ञान ही शिक्षा है। शिक्षा का कार्य बालकों में संचेतना और उद्यमिता का विकास करना है और यह हो सकता है जब बालक आविष्कार करने, खोज करने तथा शोध करने में समर्थ हो सके। इसके लिए उन्होंने कहा कि शिक्षा में बालक को अनुभव के द्वारा सीखने पर प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

गीजू भाई बधेका (Giju Bhai Badheka)—गिजू भाई ने पुस्तक प्रधान शिक्षण विधियों का विरोध किया और स्वतंत्रता, खेल, इन्द्रिय प्रशिक्षण और स्वयं करके स्वयं सीखने का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि बालक को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए। उनके शब्दों में, *"विकासात्मक बालक को स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। उसे विकासोन्मुख परिस्थितियों में से किसी प्रवृत्ति विशेष के चयन की छूट मिलनी चाहिए। साथ ही उस प्रवृत्ति में भाग लेने की छूट रुचि पैदा होनी की स्थिति में मिलनी चाहिए। स्वातन्त्र्य का अर्थ बालक को उसकी स्वतंत्रता के मार्ग पर ले चलना है।"* गीजू भाई ने कहा कि बालक को अभिव्यक्ति के पूर्ण अवसर मिलने चाहिएँ। शिक्षा के द्वारा बालक को ऐसे अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिएँ जिनमें वह अधिकाधिक क्रियाएँ कर सके, अपनी इन्द्रियों का प्रयोग कर सके और सृजन कार्य कर सके। उन्होंने कहा कि शिक्षण का पाठ्यक्रम अनुभवजन्य होना चाहिए, स्वयं करके सीखने के अवसर प्रदान करने वाला होना चाहिए।

महात्मा गांधी (Mahatma Gandhi)—गांधीजी ने कहा कि साक्षरता, शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य नहीं है। यह उसका आरम्भ भी नहीं है, यह तो नर-नारियों को सिखाने का केवल एक साधन है। साक्षरता स्वयं कोई शिक्षा नहीं है। उन्होंने शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा कि, *"शिक्षा से मेरा अभिप्राय है—बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का उच्चतम विकास।"*

"By education I mean an all round drawing out of the best, in child and man-body, mind and spirit."

गांधीजी मनुष्य को शरीर, मन और आत्मा का योग मानते हैं और यह मानते हैं कि उसके सर्वांगीण विकास के लिए इन सबका विकास होना आवश्यक है। इसके लिए उन्होंने शिक्षण की प्रक्रिया में मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा, तीनों की क्रियाओं को स्थान दिया। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने सबसे अधिक बल क्रिया (Activity) पर दिया। उनके अनुसार करके सीखना और स्वयं के अनुभव से सीखना ही उत्तम सीखना होता है।

अनुभवजन्य अधिगम के आधारों की समझ
(Understanding Foundations of Experiential Learning)

डेविड कोल्ब (David Kolb) ने अनुभवजन्य अधिगम के आधारों की विवेचना करते हुए कहा कि—

(1) अनुभवजन्य अधिगम क्रिया द्वारा सीखने के सिद्धान्त पर आधारित है।

Scanned by CamScanner

(2) अनुभवजन्य अधिगम छात्रों में जीवन के वास्तविक अनुभवों के द्वारा कौशलों को विकसित करने पर केन्द्रित है।

(3) अनुभवजन्य अधिगम, अधिगम का वह माध्यम है जिसमें अधिगमकर्त्ता शिक्षण प्रक्रिया को निर्देशित करता है, अनुभव करता है, पर्यवेक्षण करता है, चिन्तन करता है, प्रयोग या व्यवहार में लाता है और कार्यान्वित करता है।

(4) अनुभवजन्य अधिगम की मान्यता है कि सभी विषय सहसम्बन्धित हैं और यह अधिगमकर्त्ता पर निर्भर करता है कि वह अनुभवों को किस प्रकार से प्राप्त करता है? प्रत्येक अधिगमकर्त्ता को अपना अधिगम अनुभव अलग होता है, दूसरों से भिन्न होता है। अपने स्वयं का आँकलन करने में अधिगमकर्त्ता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

(5) अनुभवजन्य अधिगम के अन्तर्गत सभी इन्द्रियों के प्रयोग से अधिगमकर्त्ता को बहुइन्द्रिय अनुभव (Multisensory experience) प्राप्त होते हैं।

अनुभवजन्य अधिगम चक्र
(Experiential Learning Cycle)

डेविड कोल्ब ने कहा कि अधिगम चक्र तभी पूर्ण होता है जब कोई अधिगमकर्त्ता अधिगम के सभी स्तरों अथवा अवस्थाओं—ज्ञान (Cognition), प्रत्यक्षीकरण (Perception), व्यवहार (Behaviour), अनुभव (Experience) और प्रत्यावर्तन (Reflection)—से गुजरता है। उसने कहा कि इस चक्र को प्रस्तुत करने में मुझे जॉन डीवी (John Dewey) और जीन पियाजे (Jean Piaget) से प्रेरणा मिली। अनुभवजन्य अधिगम चक्र (Experiential Learning Cycle) को निम्न चित्र के द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है—

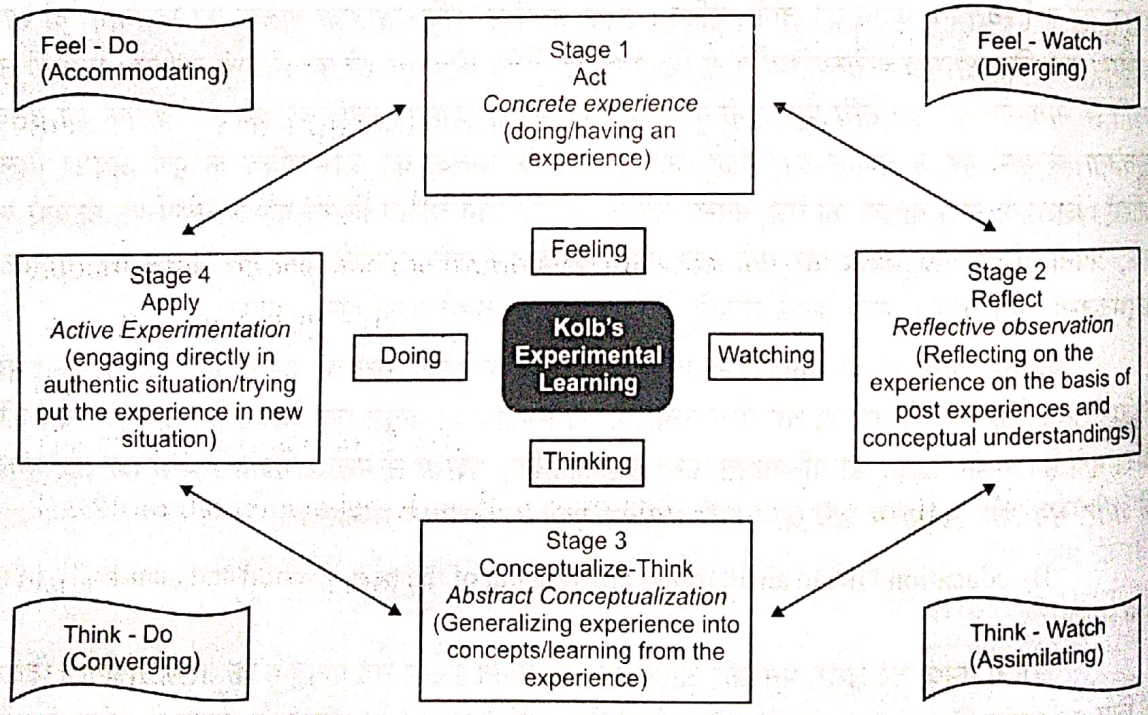

KOLB's Experiential Learning Cycle

अनुभवजन्य अधिगम चक्र की अवस्थाएँ
(Stages of Experiential Learning Cycle)

अनुभवजन्य अधिगम ज्ञान चक्र की निम्नलिखित चार अवस्थाएँ हैं—

(1) प्रथम व्यवस्था : मूर्त अनुभव की अवस्था (Stage of Concrete Experience)—अधिगमकर्त्ता केवल पढ़कर और देखकर ही नहीं सीखता अपितु उसे सभी इन्द्रियों के द्वारा अनुभव प्राप्त करने में सक्रिय रूप से भाग लेने की आवश्यकता होती है।

Scanned by CamScanner

(2) द्वितीय अवस्था : चिन्तनीय पर्यवेक्षण की अवस्था (Stage of Reflective Observation)—यह दूसरी अवस्था है, जब अधिगमकर्त्ता किसी विचार या मत को बनाने से पूर्व परिस्थिति पर विचार करता है। वह वर्तमान अनुभवों को अपने पूर्व अनुभवों से जोड़ता है, उनसे सम्बन्ध स्थापित करना है। उसके पर्यवेक्षण का केन्द्रबिन्दु देखना, निरीक्षण करना, जानना और समझना होता है।

(3) तृतीय अवस्था : अमूर्त संबोध की अवस्था (Stage of Abstract Conceptualization)—इस अवस्था में अधिगमकर्त्ता अपने अनुभवों की व्याख्या करने के लिए सिद्धान्तों का निर्माण करता है। वह सूचनाओं को एकत्रित करता है, उनका विश्लेषण करता है और निष्कर्ष निकालता है। कभी-कभी ये निष्कर्ष पूर्व निश्चित अवधारणा के लिए चुनौती भी होते हैं। इस अवस्था में अधिगमकर्त्ता का ध्यान चिन्तन द्वारा अधिगम (Learning by thinking) पर केन्द्रित होता है।

(4) चतुर्थ अवस्था : सक्रिय प्रयोग की अवस्था (Stage of Active Experimentation)—यह अन्तिम अवस्था है, जहाँ अधिगमकर्त्ता, जो कुछ उसने करके सीखा है (Learning by doing), उसका प्रयोग करता है।

डेविड कोल्ब के अनुसार अधिगम शैलियाँ (Kolb's Learning Styles)

अनुभवजन्य अधिगम की उपर्युक्त चार अवस्थाओं पर आधारित निम्नलिखित चार शैलियाँ डेविड कोल्ब ने बताई हैं—

(1) भेद होना (Diverging), [**भावना** (Feeling) **और निगरानी** (Watching)]—इसके अन्तर्गत किसी कार्य को करने में नवीन एवं काल्पनिक अभिगमन पर बल दिया जाता है। अधिगमकर्त्ता विचारों को उत्पन्न करने और मस्तिष्क विप्लन पर विशेष बल देता है।

(2) आत्मसातकरण (Assimilating), [**निगरानी** (Watching) **और चिन्तन** (Thinking)]—इसके अन्तर्गत अधिगमकर्त्ता विभिन्न निरीक्षणों और विचारों से एकीकृत सम्पूर्ण की ओर आकर्षित होता है। इसमें अमूर्त अवधारणाओं पर विशेष महत्त्व दिया जाता है।

(3) अभिस्मरण (Converging), [**क्रिया** (Doing) **और चिन्तन** (Thinking)]—इसके अन्तर्गत सिद्धान्तों के व्यावहारिक प्रयोग में तकनीकी के प्रयोग और नये विचारों के उपयोग को महत्त्व दिया जाता है।

(4) संचित करना (Accomodating), [**क्रिया** (Doing) **और भावना** (Feeling)]—इसके अन्तर्गत विचार और चिन्तन की अपेक्षा भूल और सुधार के प्रयोग पर बल दिया जाता है।

अनुभवजन्य अधिगम की व्यूह रचनाएँ (Strategies of Experiential Learning)

यद्यपि कक्षा में किसी विषय की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के अनन्तर परिस्थितियों के अनुरूप व्यूह रचनाएँ अपनायी जाती हैं तथापि निम्नलिखित व्यूह रचनाओं का उल्लेख किया जाता है, जिनका उपयोग कक्षा में शिक्षक के मार्गदर्शन में विषय और परिस्थिति के अनुसार किया जाना चाहिए—

(1) भूमिका निर्वाह (Role Play)
(2) क्षेत्रीय यात्राएँ (Field Trips)
(3) फिल्म और डॉक्यूमैन्टरीज (Films and Documentaries)
(4) वीडियो प्रोजेक्टस (Video Projects)
(5) अतिथि वक्ता (Guest Speakers)
(6) पोर्टफोलियोज (Portfolios)
(7) कला आधारित क्रियाएँ (Art based Activities)
(8) छात्रों द्वारा सामूहिक अधिगम (Group Learning by Students)

Scanned by CamScanner

(9) सहपाठी अनुवर्ग (Peer Tutoring)

(10) खेल और पहेलियाँ (Games and Puzzles)

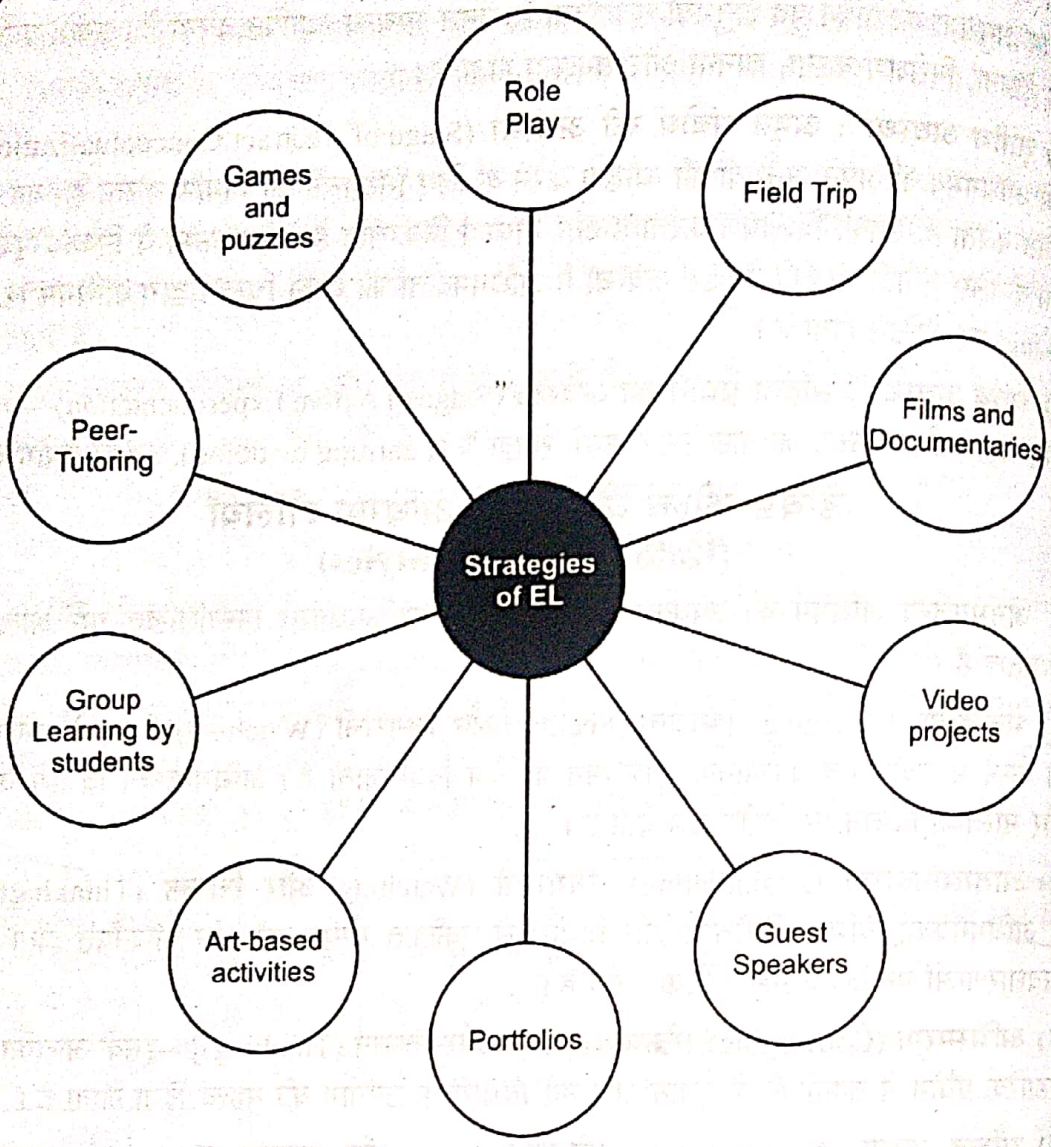

अनुभवजन्य अधिगम की पाठयोजना के आवश्यक तत्व (Essential Components of Experiential Lesson Plan)

(1) व्यावहारिक उद्देश्यों का चयन करना (Choosing Realistic Goals)—एक शिक्षक के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि वह यह जाने कि वे कौन-सी बातें हैं, कौन से विषय हैं, कौन से कौशल हैं, जो बालक के विकास के लिए आवश्यक हैं? इस आधार पर उसके व्यावहारिक उद्देश्यों का चयन करना चाहिए।

(2) अधिगम प्रकरणों का निर्धारण करना (Pick up Exciting Topics or Learning Contexts)—पाठ योजना के निर्माण में दूसरा चरण अधिगम प्रकरणों का निर्धारण करना है। शिक्षक के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण कार्य है कि वह शिक्षण के लिए ऐसी विषय वस्तु को चुने जो बालकों के लिए विशिष्ट हो, उपयोगी हो और उनको आकर्षित करने वाली हो। इसके लिए शिक्षक को बालकों से प्रतिपुष्टि (Feedback) प्राप्त करनी चाहिए।

(3) छात्रों की आवश्यकताओं और प्रतिभाओं का ज्ञान प्राप्त करना (Know Student's Needs and Talents)—इस चरण में शिक्षक को यह देखना चाहिए कि छात्र कैसे हैं? उनकी योग्यताएँ, क्षमताएँ, प्रतिभाएँ और आवश्यकताएँ क्या हैं? उनमें कौन-से कौशल विकसित करने की आवश्यकता है? सीखने की कौन-सी शैली उपयुक्त होगी? शिक्षक को योजना बनाते समय छात्रों की कठिनाइयों को ध्यान में रखना चाहिए।

(4) शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों का प्रयोग करना (Use a Range of Teaching Approaches and Methods)—इस चरण में शिक्षक को पाठ को प्रभावपूर्ण और गतिशील बनाने के लिए विभिन्न शिक्षण

Scanned by CamScanner

विधियों और प्रविधियों का चयन करना चाहिए। उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि शैक्षिक तकनीकी अभूतपूर्व विकास के फलस्वरूप अनेक उपयोगी और अत्यधिक प्रभावशाली शिक्षण विधियों जैसे—बहु-इन्द्रिय अधिगम, सहयोगी अधिगम, संगी-साथी शिक्षण और योजना आधारित अधिगम आदि का विकास हुआ है, जिनके प्रयोग से शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

(5) बालकों के जीवन से सम्बन्धित प्रासंगिक साधनों एवं अनुभवों का चुनाव करना (Select Appealing Resources and Experiences that are relevant and linked to the Children's lives and Context)—सबसे अच्छे साधन वे माने जाते हैं जो कक्षा में ही पाये जाते हैं; जैसे—छात्र स्वयं, उनकी पाँचों इन्द्रियाँ, स्टेशनरी आदि का कक्षा-कक्ष में ही उपयोग करना चाहिए। उसके पश्चात् कक्षा-कक्ष के बाहर साधनों को तलाशना चाहिए। इन साधनों के द्वारा ही बालक अपने वास्तविक जीवन से सम्बन्ध स्थापित करता है। विद्यालय के अन्दर विज्ञान, गणित, भाषा आदि की प्रयोगशालाओं और कम्प्यूटर आदि शिक्षण के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। शिक्षक को हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि वह अच्छे गुणात्मक साधनों का ही चयन करे, विश्वसनीय स्थानों से उनको मँगाये और सावधानीपूर्वक प्रयोग करने के लिए छात्रों को निर्देशित करे।

(6) उचित आंकलन (Fair Assessment)—पाठ के अन्त में शिक्षक को छात्र का उचित आंकलन करना चाहिए। अच्छा तो यह हो कि शिक्षक पूरे सत्र के दौरान छात्र का आंकलन करें और अपने निरीक्षण के अनुरूप शिक्षण के कार्यक्रम की व्यवस्था करें।

(7) मूल्यांकन करना (Evaluation)—अपने शिक्षण कार्य को सुधारने के लिए प्रत्येक पाठ शिक्षक को एक अवसर प्रदान करता है, इसलिए शिक्षक को छात्रों से प्रतिपुष्टि प्राप्त करनी चाहिए। शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य का निष्पक्ष विश्लेषण करने की आदत विकसित करनी चाहिए। उसे यह देखना चाहिए कि उसके छात्र शिक्षण क्रियाओं, शिक्षण विधियों, प्रविधियों और शिक्षण साधनों आदि के विषय में क्या कह रहे हैं? क्या प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे हैं?

शैक्षणिक एजेंट

शैक्षिणक एजेंट की अवधारणा कंप्यूटर विज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग में लाई गई है। यह शिक्षण पद्धति का ही एक सामान्य भाग है। यह कंप्यूटर और मनुष्य के बीच ऐसा सम्बन्ध है, जो शिक्षक और विद्यार्थी की शिक्षा का सही वातावरण उपलब्ध कराता है। शैक्षणिक एजेंट शिक्षा के क्षेत्र में अलग-अलग भूमिका निभाते हैं; जैसे—शिक्षक या सहपाठी की भूमिका। यह एजेंट के इच्छित उद्देश्य पर निर्भर करता है।

शैक्षणिक एजेंट का इतिहास कंप्यूटर एनीमेशन के इतिहास से निकट सम्बन्ध रखता है। जैसे-जैसे कंप्यूटर एनीमेशन का विकास हुआ, शिक्षाविदों ने इसके महत्त्व को स्वीकारा। कंप्यूटर की सहायता से सीखने वाले कंप्यूटर प्रोग्राम के बीच अधिक से अधिक सामंजस्य बैठाने की चेष्टा की जाने लगी। शैक्षणिक एजेंट पहले पहल ज्यादार कार्टून से सम्बन्धित हुआ करते थे; जैसे 1947 माइक्रोसॉफ्ट क्लिप्पी ने माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस को उपभोक्ताओं के लिए प्रोग्राम बनाने में मदद की। जो भी हो कंप्यूटर एनीमेशन के विकास के साथ शैक्षणिक एजेंट भी सजीव हो उठे हैं। 2006 तक ऐसे विकसित और पुनः व्यवहार में लाई जाने वाली सामग्रियों की आवश्यकता थी जिससे समय की बचत हो और लाभ भी ज्यादा हो। शिक्षण सामग्रियों की उपलब्धता, कीमत में कमी, एनीमेशन की लोकप्रियता वास्तव में अच्छा संकेत करते हैं। वर्तमान में व्यक्तिगत शैक्षणिक एजेंट हर क्षेत्र में सम्मिलित हैं, चाहे वह चिकित्सा का क्षेत्र हो, गणित, कानून, भाषा विज्ञान का क्षेत्र हो और चाहे क्यों न वह सेना का क्षेत्र हो। ये सभी—प्रारम्भिक पाठशाला से लेकर वयस्कों तक के लिए प्रभावकारी हैं।

शैक्षणिक एजेंटों द्वारा शिक्षा प्राप्ति के निम्नलिखित दो सिद्धान्त हैं—

(1) विभाजन के द्वारा ज्ञानप्राप्ति का सिद्धान्त—इस सिद्धान्त के अनुसार ज्ञानप्राप्ति की दिशा में सहयोग की भावना को महत्त्व दिया गया है। शैक्षिणक एजेंट की रचना ऐसे की जाती है जिससे हर विद्यार्थी

Scanned by CamScanner

तक ज्ञान स्थानांतरित हो सके, यह एक सहायक सामग्री सिद्ध हो सके और इसे उपयोग में लाने वाला व्यक्ति अपनी त्रुटियों को दूर कर सके। प्रयोगकर्ता तथा शैक्षिणक एजेंट के बीच संवाद स्थापित होना चाहिए ताकि दोनों पक्षों के बीच एक सामाजिक सम्बन्ध भी कायम हो सके। शैक्षणिक एजेंट को एक कार्यरत साथी की भूमिका निभानी चाहिए।

(2) सामाजिक-सांस्कृतिक शिक्षा का सिद्धान्त—यह सिद्धान्त यह सिखाता है कि सीखने की प्रक्रिया में बालक का सामना जब दूसरे एजेण्ट से होता है तो उसका विकास कैसे होता है? विद्यार्थी के आग्रह करने पर शिक्षक मध्यस्थता कर सकता है, काम में सहायता कर सकता है और छात्र की योग्यताओं को पहचान कर ज्ञानप्राप्ति में उसका मार्गदर्शन कर सकता है। विद्यार्थी कभी निराश हो सकता है, कभी उत्साहित, तो कभी उलझन में लेकिन हर स्थिति पर विजय प्राप्त करना उसे सीखना चाहिए।

अनुसन्धानकर्त्ताओं के द्वारा यह सुझाव दिया गया है कि शैक्षणिक एजेंट शिक्षा के वातावरण में विभिन्न भूमिका निभा सकते हैं—छात्रों को संभालना, उन्हें बढ़ाना, जाँचना, उनके सामने आदर्श प्रस्तुत करना आदि। शिक्षक, शैक्षिक सहायकों की मदद के बिना सही शिक्षा नहीं दे पाता। सही शिक्षा सही शैक्षिक उपकरणों और उपयुक्त विषयों के मेल से ही प्रभावकारी होती है। विषयवस्तु की मुख्य बातों की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए मल्टीमीडिया की भी सहायता लेनी चाहिए। शोध के द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि मनुष्य का मनुष्य के साथ शिक्षा के आदान-प्रदान का सम्बन्ध तो है परन्तु मल्टीमीडिया सिस्टम के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। इसका निर्माण इस तरह से किया गया है कि इलेक्ट्रॉनिक वातावरण में सीखने वालों को शिक्षा का अवसर मिले।

सहयोगी अधिगम

सहयोगी अधिगम एक शैक्षणिक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य कक्षा गतिविधियों के सैद्धांतिक और सामाजिक अधिगम का अनुभव करना है। बच्चों को समूह में करने के अलावा भी सहयोगी अधिगम में अनेक गुण हैं और इसे "सकारात्मक परस्पर निर्भरता का स्वरूप" भी कहा जाता है। बच्चों के लिए एक समूह होकर दिए हुए काम को सामूहिक रूप से अपने सैद्धान्तिक उद्देश्य को प्राप्त करना जरूरी है। जहाँ व्यक्ति अधिगम प्रतियोगिता संबन्धी गुण को आगे बढ़ाता है और, जो छात्र सहयोगी अधिगम करते हैं, वे अपनी और दूसरों की योग्यता वृद्धि करते हैं। इस प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका बदलकर सिर्फ जानकारी देना नहीं रह जाती बल्कि वे उसके सीखने में भी मदद करते हैं। हर कोई सफल होता है जब हर कोई कामयाबी हासिल करता है। रॉस और स्माइल कहते हैं कि कामयाब सहयोगी अधिगम हमें बौद्धिक रूप से सुचारु, सृजनशील और उच्च सोच वाला बनाता है। कक्षा में कामयाब सहयोगी अधिगम लाने के लिए पाँच महत्त्वपूर्ण तत्वों का समावेश आवश्यक है, जो निम्न है—

(1) सबसे पहला तत्व—सकारात्मक परस्पर निर्भरता,
(2) दूसरा तत्व है—वैयक्तिक और समूह उत्तरदायित्व,
(3) तीसरा तत्व है—पारस्परिक प्रोत्साहित भावना,
(4) चौथा तत्व है—बच्चों में पारस्परिक आवश्यकताओं और छोटे समूह के हुनर का शिक्षण देना, तथा
(5) पाँचवाँ तत्व है—समूह संसाधन।

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले, सामाजिक सिद्धांतकारों जैसे ऑलपोर्ट (Allport), वाट्सन (Watson), शॉ (Shaw) और मीड (Meed) ने सहकारी सीखने के सिद्धांत की स्थापना करना शुरू कर दिया था जब उनको पता चला कि अकेले काम करने की तुलना में जब समूह में काम किया जाए तो उसकी मात्रा, गुणवत्ता और समग्र उत्पादकता अधिक प्रभावी और कुशल होती है।

दार्शनिकों और मनोवैज्ञानिकों ने 1930 के दशक में जॉन डीवी, कुर्ट लेविन और मॉर्टन ने भी सहकारी सीखने के सिद्धान्त को प्रभावित किया और आज भी उसका अभ्यास होता है। डीवी मानते थे कि छात्रों के ज्ञान और सामाजिक कौशल का विकास कक्षा के बाहर और लोकतांत्रिक समाज में होना महत्त्वपूर्ण है। सहकारी सीखने के लिए लेविन के योगदान को सफलतापूर्वक सिखाना, लक्ष्य को आगे ले जाना और लक्ष्य को हासिल

Scanned by CamScanner

करने के लिए समूह के सदस्यों के बीच संबंधों की स्थापना करना उनके विचारों पर आधारित है। सहकारी सीखने के लिए मॉर्टन का योगदान सकारात्मक सामाजिक अन्योन्याश्रय था। इस विचार में छात्र समूह के योगदान के लिए उत्तरदायी है। 1994 में जॉनसन और जॉनसन ने 5 तत्वों को प्रकाशित किया (सकारात्मक अन्योन्याश्रय, व्यक्तिगत जवाबदेही, आमने-सामने की बातचीत, सामाजिक कौशल और प्रसंस्करण) जो प्रभावी समूह अधिगम, उपलब्धि, और उच्च ज्ञान के लिए सामाजिक, व्यक्तिगत और संज्ञानात्मक कौशल के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए, समस्या का हल खोजना, तर्क, निर्णय तथा योजना, आयोजन और दर्शाना।

ब्राउन और सिउफ्फेटेल्ली पार्कर (2009) और सिलटाला (2010) ने सहकारी सीखने के लिए 5 बुनियादी और आवश्यक तत्वों का वर्णन किया है—

(1) सकारात्मक अन्योन्याश्रय—सीखने में छात्रों को पूरी तरह से भाग लेना चाहिए और समूह के भीतर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक समूह के सदस्य को एक कार्य/भूमिका/जिम्मेदारी सौंपी जानी चाहिए। इसलिए उनके सीखने के लिए वे ही जिम्मेदार हैं और अपने और अपने समूह पर विश्वास करना चाहिए।

(2) आमने-सामने प्रोत्साहक बातचीत—सदस्यों को एक-दूसरे की सफलता पर बढ़ावा देना चाहिए। छात्रों को एक-दूसरे को समझने में सहायता करनी चाहिए और कार्य को पूरा होने तक उसका साथ देना चाहिए।

(3) व्यक्तिगत और समूह जवाबदेही—अध्ययन के समय प्रत्येक छात्र को सामग्री के स्वामित्व का प्रदर्शन करना चाहिए। प्रत्येक छात्र को उनके सीखने और काम के लिए जवाबदेह होना चाहिए।

(4) सामाजिक कौशल—छात्रों को सामाजिक कौशल भी सिखाया जाना चाहिए जिससे सफल सहकारी सीखने के लिए प्रेरणा मिलती है। सामाजिक कौशल में शामिल ये प्रभावी संचार, पारस्परिक सहयोग और समूह के लिए जरूरी हैं—नेतृत्व, निर्णय लेना, विश्वास निर्माण, दोस्ती-विकास, संचार और संघर्ष-प्रबंधन कौशल।

(5) समूह प्रसंस्करण—समूह प्रसंस्करण तब होता है जब समूह के सदस्य प्रतिबिंबित होते हैं, जिस पर सदस्य कार्यों में मद्दगार होते हैं और कार्यों को जारी रखने या परिवर्तन के बारे में निर्णय करते हैं। समूह प्रसंस्करण का उद्देश्य सदस्यों के समूह के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं को आगे ले जाने के साथ-साथ प्रभावशीलता में सुधार करना है।

सुधार करने के लिए छात्रों की उपलब्धि के लिए दो विशेषताएँ मौजूद होनी चाहिएँ—

(1) सहकारी शिक्षण कार्य और संरचनाओं की रूपरेखा बनाने, व्यक्तिगत जिम्मेदारी और जवाबदेही की पहचान की जानी चाहिए और व्यक्तियों को पता होना चाहिए कि उनकी जिम्मेदारियाँ वास्तव में क्या हैं और वे अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए समूह के प्रति जवाबदेह कैसे हैं?

(2) सभी समूह के सदस्यों के कार्य को पूरा करने के लिए समूह के लिए यह आदेश होना चाहिए कि वे किसी भी अन्य दल के सदस्य के द्वारा अपने कामों को पूरा नहीं करायेंगे। जो उनके अपने काम हैं, उनके लिए वे ही जिम्मेदार हैं।

सहकारी सीखने के निम्नलिखित तीन सैद्धांतिक आधार हैं—

(1) अभ्यास द्वारा सीखना,
(2) अनुकरण द्वारा सीखना, तथा
(3) करके सीखना।

यूनिट द्वितीय के परीक्षोपयोगी प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. गांधीजी के जीवन दर्शन के मुख्य तत्त्वों की विवेचना कीजिए।
2. गांधीजी के जीवन दर्शन की समीक्षा कीजिए।
3. गांधीजी के जीवन दर्शन का उनकी नई तालीम योजना पर क्या प्रभाव पड़ा है?

Scanned by CamScanner

4. "गांधीजी के शिक्षा दर्शन के वास्तविक अनुदर्शन के लिए उनके जीवन दर्शन का ज्ञान आवश्यक है।" इस सन्दर्भ में गांधीजी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिए।
5. "गांधीजी का शैक्षिक दर्शन स्वरूप की दृष्टि से प्रकृतिवादी, उद्देश्य की दृष्टि से आदर्शवादी और शिक्षण विधि की दृष्टि से प्रयोजनवादी है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।
6. गांधीजी के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन कीजिए।
7. गांधीजी ने शिक्षा के कौन-कौन से उद्देश्य बताए हैं? क्या आप उनसे सहमत हैं?
8. "गांधीजी एक महान शिक्षाशास्त्री हैं।" यह कथन कहाँ तक सत्य है? उनके द्वारा शिक्षा में किस प्रकार क्रान्ति पैदा की गई?
9. शिक्षा के क्षेत्र में गांधीजी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
10. गांधीजी की नई तालीम पर एक निबन्ध लिखिए।
11. गांधीजी की नई तालीम की समीक्षा कीजिए।
12. नई तालीम के विकास के इतिहास का वर्णन कीजिए।
13. "नई तालीम के क्षेत्र में समाज के लिए एक वरदान है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।
14. गांधीजी की नई तालीम से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
15. अनुभवजन्य अधिगम का क्या अर्थ है? इसकी विशेषताएँ बताइए।
16. अनुभवजन्य अधिगम की आवश्यकता, महत्त्व एवं क्रियान्वयन की विवेचना कीजिए।
17. अनुभवजन्य अधिगम के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक चिन्तकों के विचारों को स्पष्ट कीजिए।
18. "शिक्षा से मेरा अभिप्राय है—बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाए जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चतुर्मुखी विकास।" गांधीजी के इस कथन की व्याख्या कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गांधीजी के अहिंसा संबंधी विचारों का वर्णन कीजिए।
2. गांधीजी के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्तों को बताइए।
3. गांधीजी के पाठ्यक्रम की विशेषताएँ बताइए।
4. गांधीजी की शिक्षक संबंधी अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
5. नई तालीम के संबंध में जाकिर हुसैन समिति, 1937 द्वारा दी गयी संस्तुतियों को बताइए।
6. नई तालीम के संबंध में खेर समिति, 1938 द्वारा दिये गये सुझावों का वर्णन कीजिए।
7. नई तालीम के सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।
8. नई तालीम में किन शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है?
9. नई तालीम में शिक्षक की भूमिका का वर्णन कीजिए।
10. नई तालीम की आलोचना किन आधारों पर की गयी है?
11. गांधीजी की शिक्षा योजना को नई तालीम क्यों कहा गया है?
12. नई तालीम में हस्तकला पर सबसे अधिक बल क्यों दिया गया है?
13. नई तालीम के आलोचक इसे आधुनिक औद्योगिक युग में अनुपयुक्त क्यों कहते हैं?
14. डेविड कोल्ब ने अनुभवजन्य अधिगम के आधारों के विषय में क्या कहा है?
15. अनुभवजन्य अधिगम चक्र को स्पष्ट कीजिए।
16. अनुभवजन्य अधिगम की व्यूह रचनाएँ बताइए।
17. सहयोगी अधिगम से आप क्या समझते हैं?
18. नई तालीम की रोजगारपरक शिक्षा की अवधारणा क्या है?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. सत्य को गांधीजी के जीवन दर्शन का सर्वश्रेष्ठ तत्त्व क्यों कहा गया है?
2. गांधीजी को मानवतावादी दार्शनिक क्यों कहा जाता है?

Scanned by CamScanner

3. गांधीजी के विचारों पर किस-किस का प्रभाव पड़ा है?
4. गांधीजी ने मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए क्यों कहा है?
5. गांधीजी के अनुसार शिक्षा का सर्वोत्तम उद्देश्य क्या है?
6. क्रिया द्वारा सीखने की शिक्षण विधि से आप क्या समझते हैं?
7. गांधीजी विद्यालय को सामुदायिक केन्द्र के रूप में क्यों देखना चाहते थे?
8. गांधीजी की अनुशासन की अवधारणा क्या है?
9. टॉलस्टाय आश्रम से गांधीजी का क्या सम्बन्ध है?
10. बुनियादी स्कूलों के चार स्तरों के नाम बताइए।
11. गांधीजी की नई तालीम को शिल्प प्रधान शिक्षा प्रणाली क्यों कहा गया है?
12. बुनियादी शिक्षा के स्कूलों की समय-सारिणी का उल्लेख कीजिए।
13. नई तालीम में धार्मिक शिक्षा का क्या स्थान है?
14. अनुभवजन्य अधिगम की परिभाषा दीजिए।
15. डेविड कोल्ब ने अनुभवजन्य अधिगम की कौन-सी शैलियाँ बताई हैं?
16. सहयोगी अधिगम के महत्त्वपूर्ण तत्त्वों को बताइए।
17. 'भूमिका निर्वाह' का क्या अर्थ है?
18. अनुभवजन्य अधिगम की प्रगति में सहयोग करने के लिए राज्य सरकारों द्वारा किये गये कार्य बताइए।
19. सहकारी सीखने के सिद्धान्त को किन दार्शनिकों ने प्रभावित किया है?
20. अनुभवजन्य अधिगम का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

Scanned by CamScanner